2 फरवरी 2013, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 35, अंक : 21 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

फरवरी (प्रथम), 2013 (वीर नि. संवत्-2539) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

साप्ताहिक गोष्ठी सम्पन्न

जयपुर (राज.) : श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय द्वारा होने वाली साप्ताहिक रविवारीय गोष्ठियों की शृंखला निम्न गोष्ठियाँ आयोजित की गई।

(1) दिनांक 20 जनवरी को **'छहढाला : गागर में सागर'** विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता टोडरमल महाविद्यालय के अधीक्षक पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में अमोल अम्बेकर औरंगाबाद (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं शुभम जैन बिनौली व अच्युतकांत जैन जसवंतनगर (उपाध्याय वरिष्ठ) चुने गये।

गोष्ठी का संचालन मयंक जैन भिण्ड एवं विवेक जैन गड़ेकर ने किया।

(2) दिनांक 25 जनवरी को **'अनेकान्त एवं स्याद्वाद'** विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित संजीव कुमारजी गोधा जयपुर ने की। आपने सारगर्भित रूप से विषय का स्पष्टीकरण किया।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में उपाध्याय वर्ग में ऋषभ जैन भिण्ड (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं शास्त्री वर्ग में अनुपम जैन भिण्ड (शास्त्री तृतीयवर्ष) रहे।

गोष्ठी का मंगलाचरण शुभम जैन मंडावरा एवं संचालन अभिषेक जैन व दर्शित जैन ने किया।

(3) दिनांक 27 जनवरी को **'चार अनुयोग'** विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसकी अध्यक्षता पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में उपाध्याय वर्ग से सर्वदर्शी भारिल्ल (उपाध्याय कनिष्ठ) व निधि जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं शास्त्री वर्ग से मयंक जैन भिण्ड (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे।

गोष्ठी का मंगलाचरण पीयूष जैन गौरझामर एवं संचालन विवेक गडेकर व स्वतंत्र शास्त्री ने किया।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

शाकाहार संगोष्ठी संपन्न

खतौली (उ.प्र.) : यहाँ जैन मिलन द्वारा दिनांक 19 जनवरी को राष्ट्रीय स्तर पर शाकाहार संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं मुख्य अतिथि सुश्री उमा भारती (पूर्व मुख्यमंत्री-म.प्र.शासन) मंचासीन थी। समारोह की अध्यक्षता श्री सुरेशचंदजी जैन 'ऋतुराज' (राष्ट्रीय अध्यक्ष-भारतीय जैन मिलन) ने की।

शाकाहार विषय पर डॉ. भारिल्ल ने बोलते हुए कहा कि समाज को जागरूक रहते हुए सभी को मिलकर शाकाहार अपनाना चाहिये व उसका प्रचार-प्रसार करना चाहिये।

कार्यक्रम के अन्तर्गत डॉ. भारिल्ल द्वारा लिखित शाकाहार पुस्तक सभी को भेंट स्वरूप प्रदान की गई।

मुख्य अतिथि उमाभारती ने अपने वक्तव्य में कहा कि अपने जीवन में सदाचारी व नैतिक मूल्यों का पालन करने पर ही यह समाज व देश शाकाहारी होगा और विश्व में अग्रणीय स्थान प्राप्त करेगा। उन्होंने डॉ. भारिल्ल के वक्तव्य व पुस्तक की सराहना करते हुए कहा कि देश में शाकाहार का प्रचार-प्रसार डॉ. भारिल्ल जैसे वक्ता के माध्यम से ही संभव है।

वेदी प्रतिष्ठा व कलशारोहण महोत्सव संपन्न

ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ श्री महावीर परमागम मंदिर सेवासमिति न्यास लाला का बाजार लश्कर में दिनांक 13 व 14 दिसम्बर 2012 को नवीन वेदी प्रतिष्ठा, जिनबिम्ब विराजमान एवं शिखर कलशारोहण का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

दिनांक 13 दिसम्बर को प्रातः मंगल शोभा यात्रा निकाली गई। ध्वजारोहण पण्डित सुनीलजी शास्त्री मुरार द्वारा एवं मंडप का उद्घाटन श्री वज्रसेनजी जैन लश्कर द्वारा किया गया।

दिनांक 14 दिसम्बर को जिनेन्द्र भगवान की भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। तत्पश्चात् जिनबिम्ब विराजमान, शिखर कलशारोहण एवं ध्वजारोहण कार्यक्रम संपन्न हुये। रात्रि में विविध मनोरंजक कार्यक्रम हुये।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन के निर्देशन में संपन्न हुये। **- शीतल प्रसाद जैन**

वार्षिकोत्स

व पत्रिका

सम्पादकीय –

93

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा – १६६

अब १६६वीं गाथा में निश्चय से शुद्धसंप्रयोग को शुभभावरूप बंध का हेतुपना होने से मोक्षमार्ग होने का निषेध किया गया है।

मूल गाथा इसप्रकार है –

अरहंतसिद्धचेदियपवयणगणणाणभत्तिसंपण्णो।
बंधदि पुण्णं बहुसो ण हु सो कम्मक्खयं कुणदि।।१६६।।

(हरिगीत)

अरहंत सिद्ध मुनिशास्त्र की अर चैत्य की भक्ति करे।
बहु पुण्य बंधता है उसे पर कर्मक्षय वह नहिं करे।।१६६।।

आचार्य श्री कुन्दकुन्द देव मूल गाथा में कहते हैं कि अरहंत, सिद्ध, चैत्य (अरहंत की प्रतिमा) प्रवचन (शास्त्र) मुनिगण और ज्ञान के प्रति भक्ति सम्पन्न जीव बहुत पुण्य बांधता है, परन्तु वस्तुतः वह कर्मक्षय नहीं करता।

आचार्य अमृतचन्द्र अपनी समय व्याख्या टीका में कहते हैं कि पूर्वोक्त शुद्धसंप्रयोग को कंथचित् अर्थात् निश्चयनय की अपेक्षा से बंध हेतुपना होने से उसका मोक्षमार्गपना निषिद्ध है अर्थात् ज्ञानी को वर्तता हुआ शुद्धसंप्रयोग (शुभभाव) निश्चय से बंध का हेतुभूत होने के कारण मोक्षमार्ग हीं है – ऐसा दर्शाया है।

अर्हंतादि के प्रति भक्ति युक्त जीव कथंचित् शुद्धसंप्रयोगवाला होने पर भी अल्पराग विद्यमान होने से शुभोपयोगीपने को न छोड़ता हुआ बहुत पुण्य बांधता है; परन्तु वस्तुतः सकल कर्म का क्षय नहीं करता। इस कारण सर्वत्र राग की कणिका भी त्यागने योग्य है; क्योंकि वह राग की कणिका परसमय प्रवृत्ति का कारण है।

इसी भाव के पोषण को कवि हीरानन्दजी काव्य में कहते हैं –

(दोहा)

जिन–सिध–चैत्य सु परवचन, संघ–ग्यान इन प्रीति।
पुण्य करम का बंध बहु, करमनास नहिं रीति।।२३४।।

(सवैया इकतीसा)

देव–गुरु–ग्रन्थ विषैं भक्ति धर्मानुराग,
सुद्ध संप्रयोग सोई ग्यानी विषै तोषना।
राग अंस जीवै तातैं सुभ उपयोग भूप,
भूमिका प्रसिद्ध तातैं पुण्यबंध पोषना।।
बंध की प्रनाली लसै करम की सत्ता बसै,
विद्यमान मोख नाहीं कर्मरूप सोषना।
तातैं रागरूप कनीं ज्ञानी जहाँ वहाँ हनी,
ऐसी जिनराज मनी साची भाँति घोषना।।२३५।।

(दोहा)

राग–कनी जौलौं रहे, तौलौं मुकति न होइ।
वीतराग तातैं कह्या, सिव अधिकारी जोइ।।२३६।।

कवि हीरानन्दजी ने उक्त काव्यों में कहा उसका सारांश यह है कि अरहंत, सिद्ध, जिनप्रतिमा, जिनप्रवचन एवं मुनि संघ के प्रति प्रीति और भक्ति से पुण्य कर्म का बंध होता है, कर्मों का नाश नहीं होता; क्योंकि वह सब शुभराग है, पर ऐसा भाव ज्ञानी को आये बिना भी नहीं रहता, आता ही है।

देव–शास्त्र–गुरु के प्रति जो भक्तिभाव, धर्मानुराग ज्ञानी को होता है, उसे ही शुद्ध संप्रोक्त कहते हैं। भूमिकानुसार ऐसा भाव आता ही है, पर ज्ञानी यह भी जानता है कि यह बंध है, इससे मोक्ष नहीं होता; इसलिए ज्ञानी इस रागांश को भी अनन्तः त्याग कर आत्मा के स्वरूप में स्थिर होने का पुरुषार्थ करता है।

'जब तक रागांश रहता है, तब तक मुक्ति नहीं होती' – ऐसा दोहा नं. २३६ में स्पष्ट कहा है तथा यह भी कहा है कि वीतरागी ही मोक्ष का अधिकारी है, ऐसा जानना।

गुरुदेव श्रीकानजी स्वामी अपने व्याख्यान में कहते हैं कि वीतरागी सर्वज्ञ भगवान के प्रति भक्ति का भाव पुण्य–बंध का कारण है, तथापि ज्ञानी को भक्ति का भाव आये बिना रहता।

अरहंत, सिद्ध, चैत्यालय, जिनप्रतिमा, जिन प्रवचन एवं मुनिराजों के प्रति भक्ति एवं आदर का भाव धर्मी जीव को आये बिना नहीं रहता; परन्तु वह जानता है कि यह राग परद्रव्य के अवलम्बन से होनेवाला है, अतः यह धर्म नहीं है। जिनप्रतिमा पर हुआ रागभाव भी बंध का कारण है; पर इससे जिनप्रतिमा का निषेध नहीं हो सकता। धर्मी को शुभराग होने पर जिनप्रतिमा की भक्ति–पूजा का भाव आता ही है; परन्तु धर्मी राग से धर्म होना नहीं मानता तथा शुभराग के निमित्तों की उत्थापन भी नहीं करता।

जगत में धर्मी जीव अनादि से होते आये हैं। उनके निश्चय से तो चैतन्य का बहुमान है, किन्तु राग के समय निमित्त के रूप में जिनप्रतिमा के दर्शन–भक्ति–पूजन का भाव भी आता ही है। तथापि धर्मी जीव राग को मोक्षमार्ग नहीं मानते। मोक्षमार्ग तो एक वीतराग भाव ही है। वह पर से निर्पेक्ष है – ऐसा जानते हुए भी धर्मी जीवों को भूमिकानुसार आत्मभानपूर्वक देव–शास्त्र–गुरु के प्रति प्रमोदभाव, भक्ति का भाव आये बिना नहीं रहता।

इसप्रकार गुरुदेव श्री ने मोक्षमार्ग में शुभभाव की उपयोगिता भी बताई और साथ ही उस मोक्षमार्ग में शुभभाव से ऊपर उठने की प्रेरणा भी दी।●

रहस्य : रहस्यपूर्ण चिट्ठी का

110 पाँचवां प्रवचन -डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष माने वास्तविक प्रत्यक्ष नहीं, जिसे लोक व्यवहार में प्रत्यक्ष कहा जाता है, वह। दुनिया में लोग कहते हैं कि मैंने उसे प्रत्यक्ष देखा, अपनी आँखों से देखा। ऐसा कहते हैं कि मैंने उसे ऐसा कहते अपने कानों से सुना है, मैंने वह वस्तु चखकर देखी है; अरे, भाई ! जब तूने आँख से देखा, कान से सुना, जीव से चखा; तो वह ज्ञान पराधीन हो गया, इन्द्रियाधीन हो गया; इसलिए परोक्ष ही हो गया न; क्योंकि पराधीन ज्ञान को ही तो परोक्ष कहते हैं।

अन्य लौकिक ज्ञान की अपेक्षा इसमें कुछ विशेष स्पष्टता होने से परोक्ष होने पर भी इसे व्यवहार में प्रत्यक्ष कह देते हैं। इसका ही नाम शास्त्रों में सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष कहा है।

इसके अतिरिक्त एक अनुभव प्रत्यक्ष भी होता है।

यहाँ प्रश्न यह है कि अनुभव के काल में आत्मा का प्रत्यक्ष ज्ञान होता है या परोक्ष। यदि प्रत्यक्ष ज्ञान होता है तो वह कौन सा प्रत्यक्ष है - पारमार्थिक प्रत्यक्ष या सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष।

परोक्ष प्रमाण मति, स्मृति, प्रत्यभिज्ञान, तर्क, अनुमान और आगम के भेद से ६ प्रकार का है। आगम प्रमाण श्रुतज्ञानरूप है और शेष पाँच प्रमाण मतिज्ञानरूप हैं; क्योंकि उन सभी में मतिज्ञानावरणकर्म का क्षयोपशम निमित्त होता है।

मति, स्मृति आदि का स्वरूप मूल में ही स्पष्ट किया जा चुका है।

केवलज्ञानरूप पारमार्थिक प्रत्यक्ष तो आत्मानुभव करनेवाले आत्मार्थी को अभी है नहीं; हो नहीं सकता और अवधिज्ञान और मन:पर्ययज्ञान कदाचित् किसी चतुर्थकालीन भावलिंगी संत को हो तो भी उन अवधिज्ञान और मन:पर्ययज्ञान के विषय रूपी पदार्थ हैं, पर के मन में स्थित विकल्प हैं; अत: अनुभव प्रत्यक्ष में उनका भी कोई उपयोग संभव नहीं है।

अब मात्र मतिज्ञान और श्रुतज्ञान रहते हैं। भगवान आत्मा का अनुभव करने में मात्र वे ही उपयोगी हैं; पर उन्हें महाशास्त्र तत्त्वार्थसूत्र में अत्यन्त स्पष्टरूप से परोक्ष कहा है। अत: एक अपेक्षा तो यह है कि **आत्मानुभव मूलत: परोक्ष ही है।**

उक्त तथ्य को प्रस्तुत करते हुए पण्डित टोडरमलजी ने अनुभवप्रत्यक्ष के संदर्भ में संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है।

मुख्यरूप से पाँच प्रकार के ज्ञानों में प्रत्यक्ष-परोक्ष का बंटवारा सैद्धान्तिक ग्रन्थों में; प्रत्यक्षप्रमाण में पारमार्थिक प्रत्यक्ष और सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष संबंधी बंटवारा तथा परोक्षप्रमाण में मति, स्मृति, प्रत्यभिज्ञान, तर्क, अनुमान और आगम संबंधी बंटवारा न्याय ग्रन्थों में तथा अनुभव प्रत्यक्ष संबंधी उल्लेख मुख्यरूप से अध्यात्म ग्रन्थों में पाया जाता है।

ध्यान रहे न्यायशास्त्र में स्वमतमण्डन और परमतखण्डन की, अध्यात्मशास्त्रों में आत्महित की एवं सिद्धान्तशास्त्रों में वस्तुस्वरूप प्रतिपादन की मुख्यता रहती है।

सिद्धान्तशास्त्र संबंधी कथनशैली, न्यायशास्त्र संबंधी कथनशैली और आध्यात्मिक कथनशैली में जो मूलभूत अन्तर होता है, उसके परिणाम स्वरूप ही यह अन्तर दिखाई देता है।

स्वानुभवदशा में जो ज्ञान आत्मा को जानता है; वह ज्ञान प्रत्यक्षप्रमाण में आता है कि परोक्षप्रमाण में ? प्रश्न मूलत: यह है।

उक्त संदर्भ में पण्डित टोडरमलजी का कहना यह है कि क्षयोपशम ज्ञानवाले छद्मस्थ जीवों को जो आत्मानुभव होता है, वह मति-श्रुतज्ञान में ही होता है तथा मति-श्रुतज्ञान परोक्ष हैं। अत: वह अनुभव परोक्षप्रमाण में ही आता है; तथापि अध्यात्मशास्त्रों में आत्मानुभूति को अनुभवप्रत्यक्ष कहा गया है।

उक्त संदर्भ में रहस्यपूर्णचिट्ठी में जो समाधान सप्रमाण प्रस्तुत किया गया है; उसका संक्षिप्त सार इसप्रकार है -

सबसे पहली बात तो यह है कि स्वानुभवदशा में आत्मा का जानना श्रुतज्ञान में होता है और श्रुतज्ञान मतिज्ञानपूर्वक होता है। मतिज्ञान और श्रुतज्ञान परोक्ष हैं; इसलिए आत्मानुभव प्रत्यक्ष नहीं, परोक्ष ही है।

अवधिज्ञान और मन:पर्ययज्ञान मात्र रूपी पदार्थों को ही जानते हैं और केवलज्ञान छद्मस्थों को होता नहीं; इसलिए अनुभव में प्रयुक्त ज्ञान पारमार्थिक प्रत्यक्ष नहीं हो सकता।

अनुभव में प्रयुक्त ज्ञान सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष भी नहीं हो सकता; क्योंकि सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष में जैसे नेत्रादिक से साफ-साफ दिखाई देता है; अनुभवज्ञान में आत्मा के असंख्य प्रदेश, अनंत गुण एवं आकार-प्रकार वैसे साफ-साफ दिखाई नहीं देते।

तात्पर्य यह है कि पाँच इन्द्रियों के निमित्त से होनेवाले ज्ञान में जितनी व जैसी स्पष्टता, निर्मलता पाई जाती है; वैसी व उतनी भी स्पष्टता आत्मानुभूति के काल में आत्मा को जानने में नहीं होती।

अरे, भाई ! मुझे अपना चेहरा एकदम जैसा साफ-साफ दिखाई दे रहा है; अनुभव के काल में यह भगवान आत्मा वैसा साफ-साफ दिखाई नहीं देता। इसलिए इसे सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष भी नहीं कह सकते।

लोग कहते हैं कि आज मुझे अनुभव में आत्मा एकदम साफ-साफ दिखाई दिया, एकदम जगमगाता हुआ, प्रकाशमय जगमगज्योतिवाला।

शास्त्र कहते हैं कि आत्मा साफ-साफ दिखाई नहीं देता, पर यह कहता है कि इसे आत्मा साफ-साफ दिखाई दिया। आत्मा में नेत्र इन्द्रिय से पकड़ में आनेवाला पौद्गलिक प्रकाश नहीं होता और इसे आत्मा सूर्य जैसा जगमगाता दिखाई देता है।

क्या कहें ऐसे लोगों के लिए ? इन लोगों के विकल्पात्मक ज्ञान में भी अभी आत्मा का स्वरूप स्पष्ट नहीं है तो फिर निर्विकल्पक अनुभव की बात ही क्या करें ?

(शेष पृष्ठ 8 पर...)

वार्षिकोत्स

व पत्रिका

(पृष्ठ 5 का शेष ...)

आत्मा का अनुभव किसप्रकार होता है - यह बात स्पष्ट करते हुए रहस्यपूर्णचिट्ठी में तो अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि जैनागम में आत्मा का स्वरूप जैसा कहा है; उसे वैसा जानकर, उसमें परिणामों को मग्न करता है; इसलिए यह आगमज्ञान परोक्ष प्रमाण हुआ।

ध्यान रहे इसमें भी आत्मा ज्ञान में साक्षात् ज्ञात नहीं हुआ है; अपितु शास्त्रों को पढ़कर, गुरुमुख से सुनकर आत्मस्वरूप समझा है और उसमें अपने परिणामों को मग्न किया है।

''मैं आत्मा हूँ; क्योंकि मुझमें ज्ञान है। जहाँ-जहाँ ज्ञान होता है, वहाँ-वहाँ आत्मा होता है; जैसे सिद्धादिक। जहाँ-जहाँ आत्मा नहीं है, वहाँ-वहाँ ज्ञान भी नहीं है; जैसे मुर्दा।''

इसप्रकार अनुमान द्वारा वस्तु का निश्चय करके उसमें परिणाम मग्न करता है; इसलिए यह अनुमानरूप परोक्षप्रमाण हुआ। इसमें भी तर्क से युक्ति से आत्मस्वरूप का अनुमान किया गया है, आत्मा को प्रत्यक्ष नहीं जाना है। **(क्रमशः)**

मुम्बई में प्रथमबार विभिन्न पाठशालाओं के बीच -

प्रतियोगिताएं संपन्न

मुम्बई : सर्वोदय संस्कार यूथ फाउन्डेशन एवं दिगम्बर जैन समाज मुम्बई के सहयोग से प्रथम बार सर्वोदय तीर्थधाम घाटकोपर (पश्चिम) में मुम्बई की सभी पाठशालाओं के मध्य विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें मुम्बई की 16 पाठशालाओं के 160 प्रतियोगियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर भाषण, वाद-विवाद, प्रश्नमंच, भजन, चित्रकला आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया एवं पुरस्कार के रूप में स्वर्ण, रजत व कांस्य पदक प्रदान किये गये। सभी पाठशालाओं में संस्कार पाठशाला घाटकोपर ने सर्वाधिक पदक जीतकर प्रथम स्थान प्राप्त किया, साथ ही **बेस्ट पाठशाला ऑफ मुम्बई 2013-2014** की उपाधि प्राप्त की।

इस प्रतियोगिता में मुम्बई के समस्त शास्त्री विद्वानों ने परीक्षक एवं मार्गदर्शक के रूप में अपना सहयोग प्रदान किया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में घाटकोपर समाज का अभूतपूर्व योगदान रहा। इस प्रतियोगिता की संकल्पना पण्डित अक्षयजी शास्त्री ने की। प्रतियोगिता को सफल बनाने में पण्डित अनिलजी शास्त्री, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री एवं पण्डित देवांगजी गाला ने एवं घाटकोपर समाज के श्री राजूभाई गांधी, श्री हंसमुखभाई मोदी, श्री अशोकजी 'शान्ति', श्री अशोकजी 'सम्भव', श्री पवनजी बरछा, श्री विजयभाई कपाडिया आदि महानुभावों का सक्रिय सहयोग रहा। श्री विजयभाई दादर 'हाथरस' ने आगामी प्रतियोगिता दादर में होने की भावना व्यक्त की है।

योगसार विधान संपन्न

मुम्बई : यहाँ घाटकोपर में दिगम्बर जैन मुमुक्षु समाज के तत्त्वावधान में पारसधाम के आधुनिक हॉल में दिनांक 22 से 25 दिसम्बर तक योगसार विधान का अयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं डॉ. मुकेशजी शास्त्री 'तन्मय' विदिशा के प्रवचनों का लाभ मिला।

इस कार्यक्रम में लगभग 400 लोगों ने धर्मलाभ लिया, जिसमें श्री कान्तिभाई मोटाणी मुम्बई, श्री प्रवीणभाई वोरा मुम्बई, उल्लासभाई जोबालिया मुम्बई, श्री विनुभाई शाह मुम्बई, श्री सुमनभाई दोशी राजकोट, ब्र. रमाबेन पारेख देवलाली, श्री महेन्द्रभाई भालाणी, श्री सतीशभाई दोशी मुम्बई, श्री निखिलभाई मेहता, श्री किरीटभाई दोशी मुम्बई, श्री शांतिभाई शाह मुम्बई, श्री विजयभाई जैन हाथरस, श्री बचुभाई पारेख मुम्बई, श्री कमलकुमारजी बड़जात्या मुम्बई आदि महानुभाव भी उपस्थित थे।

हार्दिक बधाई !

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक पण्डित शैलेन्द्र कुमारजी शास्त्री (बिहार) द्वारा राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान जयपुर में आचार्य (जैनदर्शन) की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर दिनांक 21 जनवरी 2013 को कुलपति द्वारा स्वर्णपदक प्रदान किया गया।

इस उपलब्धि पर जैनपथप्रदर्शक एवं टोडरमल महाविद्यालय की ओर से हार्दिक बधाई !

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

14 से 17 फरवरी	बजरंग नगर एवं ढाईद्वीप, इन्दौर	सिद्धचक्र विधान एवं पंचकल्याणक घोषणा
22 से 24 फरवरी	जयपुर	वार्षिकोत्सव
22 से 25 मार्च	अलवर	विधान
26 व 27 मार्च	कोटा(मुमुक्षु आश्रम)	अष्टाह्निका

प्रकाशन तिथि : 28 जनवरी 2013

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए. द्वय (जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127